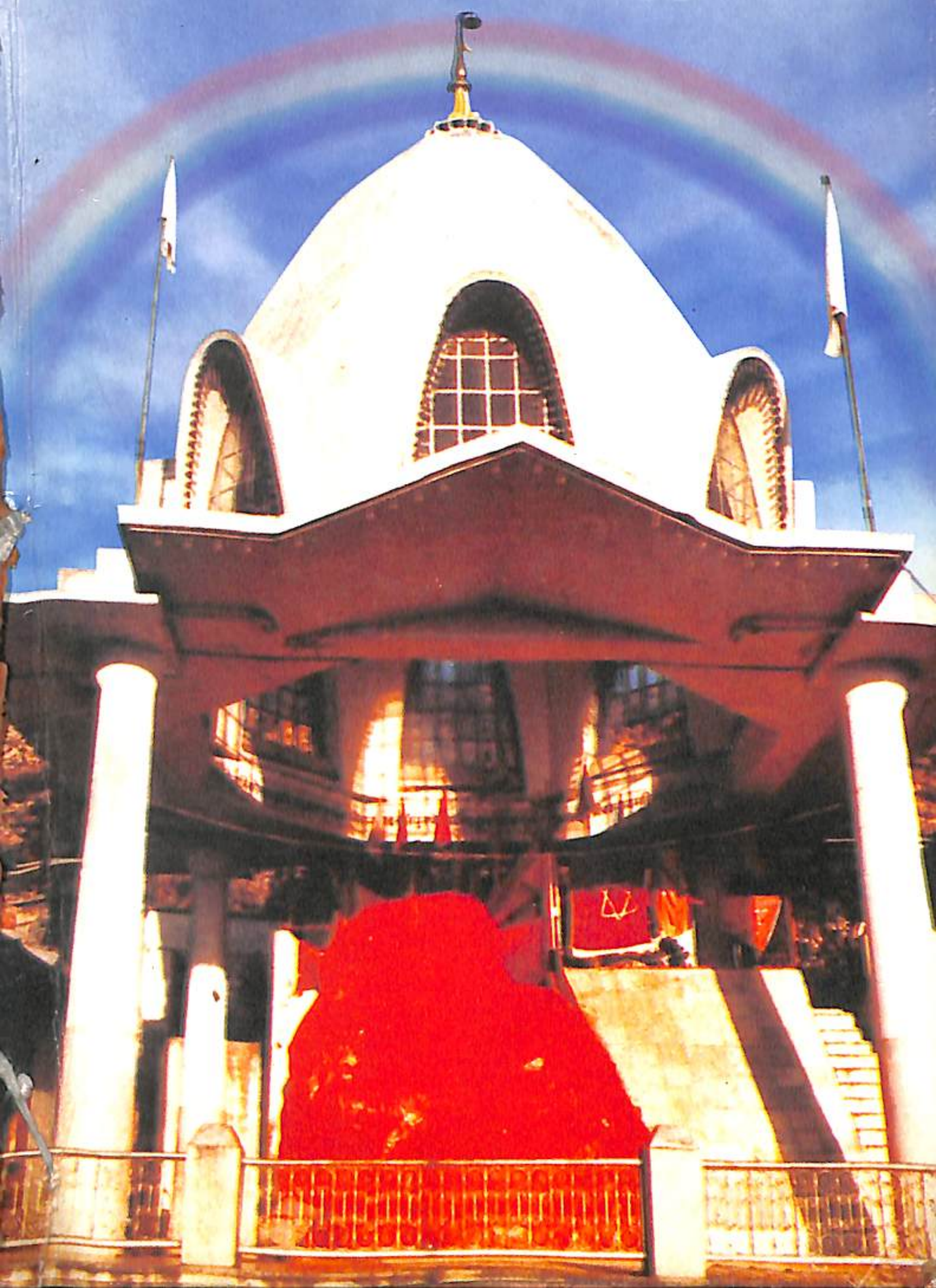
॥ श्री ॥





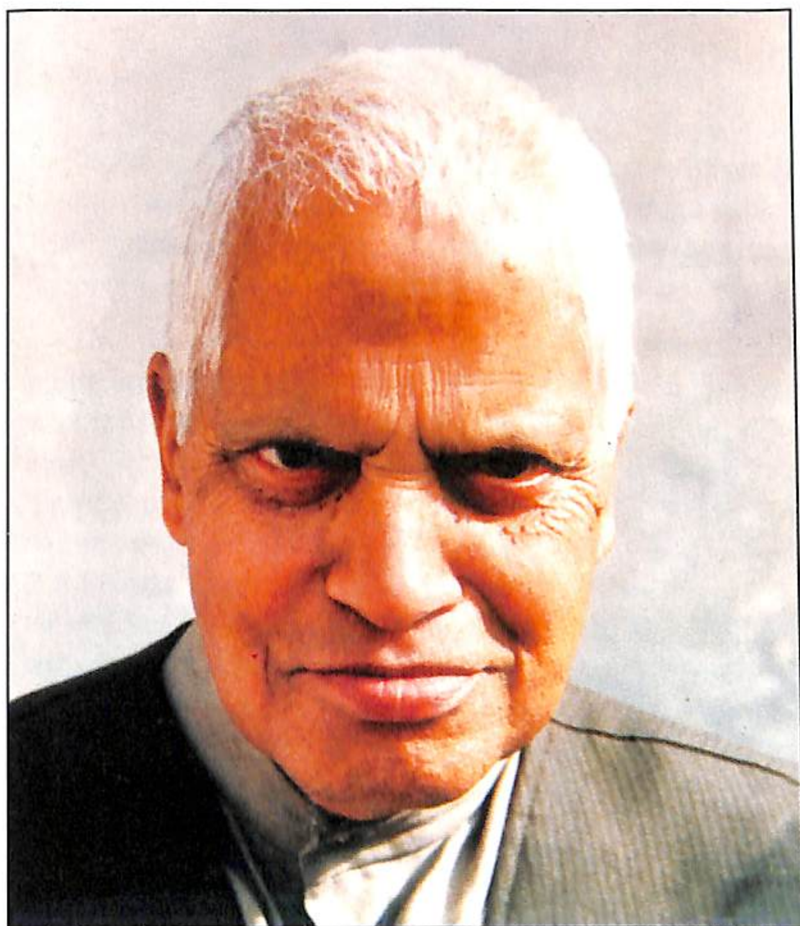
आराधना





ब्रह्मलीन स्वामी प्रेमानन्द जी पुरी
(मौनी बाबा)

श्री गणेशाय नमः



स्व. पण्डित जियालाल कौल

FOREWORD

Om Sri Siddhidata Ganeshaya Namah
Om Sri Sharikaya Namah
Om Sri Ragniya Namah
Om Sri Jwalaye Namah
Om Sri Amarnathaya Namah

There are a few memories in life which get brighter and brighter with time. These memories make the mind sublime with a sense of all-prevading happiness beyond the normal ways of language and expression.

One of these memories relates to my experience as a child going around the *Hari Parbat* early in the morning with my *siblings* following my father. We would all chant the *slokas* along with my father, our faces bright and the mind quiet with the touch of divinity. I would have my hands held together near my chest welcoming with all my senses, my God Ganesha and Sharika to my heart. The entire atmosphere appeared to be still but for the jingling sound of the pebbles along the track we walked and sound of the birds who gathered to get the seed and small portions of bread that we carried for them. At Ram Mandir, we would watch the sunrise over the Dal Lake and feel the touch of divine happiness.

I would associate myself with the grass laden with the dew as if in a posture of respect for the God. As the sun rises, the dew drops vanish and the grass straightens up as if it could now withstand all the damaging forces of the world and stay alive. I marvel at this phenomenon and say in my mind that the grass has been able to survive because of the divine touch of the dew.

I can no longer get back to my childhood any more nor

can I get the opportunity of doing the daily *Parikrama* around the *Hari Parbat*. What now remains with me is only the treasure of the *slokas* that we recited then. Many of these *slokas* are not formally written down but are on *shruti* passed on from generation to generation and brought out in print earlier by Sri Ganesha Mandli. I thought that I should reproduce the collection of these verses, *bhajans* and *slokas* so that they remain as fresh and bright as ever.

I am grateful to Prof. Chaman Lal Sapru for providing scholarly inputs in reviewing and revising the Kashmiri portion of the manuscript and bringing it in tune with the latest style of diacritical signs etc. to make it readable easily. I am also thankful to Shri T.N. Dhar 'Kundan' for presenting Sanskrit Slokas in the correct form. Finally I am indeed indebted to Shri A.N. Kaul Sahib for all his advice and help. Their's has indeed been a labour of love and reverence for Mother Sharika and She would surely bless them all.

Karma is the essence of life with my God Ganesha as the Divine Priest. Sharika is the Divine Mother of Creation. God Krishna is the Saviour.

I invoke Thee in my heart and cry in happiness.

With all humility, I dedicate this compilation to the memory of my Guru Swami Premanand Puri (Mauni Baba) and my father Shri Jia Lal Koul. Om Shanti ! Om Shanti ! Om Shanti !

Om Sri Bhagwate Namah

Roshan Lal Koul

B-40, SFS Flats, Shiekh Sarai, Phase-I
New Delhi-110 017 Tel. No. 601 6105

निवेदन

ॐ श्री सिद्धि दाता गणेशाय नमः॥

ॐ श्री शारिकायै नमः॥

ॐ श्री महाराज्ञायै नमः॥

ॐ श्री ज्वालायै नमः॥

ॐ श्री अमरनाथाय नमः॥

जीवन में कुछ स्मृतियां होती हैं जो समय के साथ-साथ निरंतर प्रकाशमान होती जाती हैं। यह स्मृतियां साधारण वाणी एवं अभिव्यक्ति से परे स्मृतियों को सर्वव्यापी आनन्द से अभिभूत मन को बनाती हैं।

इसी प्रकार की कुछ स्मृतियां मेरे बचपन से संबंधित हैं, जब मैं सुबह सवेरे अपने पिताश्री के साथ हारी पर्वत की परिक्रमा के लिए जाता था। हम सब पिताजी के साथ-साथ श्लोक पढ़ते जाते थे। हमारा मुख मंडल तेजयुक्त और मन दैवी स्पर्श से शांत रहता था। मैं अपने दोनों हाथ अपने वक्ष पर विनम्रता से रखकर पूर्ण समर्पण भाव से अपने आदिदेव गणेश एवं शारिका भवानी का स्वागत करता था। संपूर्ण वातावरण शांत प्रतीत होता था— केवल मार्ग में हमारे चलने के साथ कंकरों के टकराने की ध्वनि अथवा हमारे द्वारा फेंके गए अन्न कणों एवं रोटियों के टुकड़ों को खाने के लिए आने वाले पक्षियों की कलरव ध्वनि सुनाई देती थी। राम मंदिर के पास हम सामने की डल झील के उस पार सूर्योदय का भव्य दृश्य देखकर एक अद्‌भुत आध्यत्मिक अनुभूति का आनंद प्राप्त करतें थे।

मैं अपने को ओस कणों से सनी घास के साथ एकाकार करके प्रभु के प्रति अपने आदर एवं श्रद्धा की मुद्रा में प्राप्त होता था। सूर्योदय के साथ ओस कण समाप्त हो जाते हैं और घास ऊपर उठ जाती है मानो वह संसार के सभी कष्टकारी तत्वों के प्रति खड़े होकर प्राणवन्त हो जाते हैं। मैं इस अद्‌भुत अनुभूति से द्रवीभूत होकर मन ही मन कहता घास को ओस कणों एवं दैवी स्पर्श का सहारा मिला तो अपना अस्तित्व स्थापित करने की क्षमता प्राप्त कर सका।

मैं फिर बचपन को प्राप्त नहीं कर सकता और न ही मुझे प्रतिदिन हारी पर्वत की परिक्रमा करने का अवसर ही मिल सकता है। अब मेरे पास बस उन श्लोकों एवं स्तुतियों का खज़ाना शेष है जो तब हम उच्चारते थे। इनमें से अधिकांश स्तोत्र लिखित रूप में नहीं हैं बस केवल 'श्रुति' है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाए जाते हैं और गणेश मंडली द्वारा पहले प्रकाशित किए गए। मुझे विचार आया कि मुझे इन स्तुतियों एवं भजनों के संकलन को पुनः प्रकाश में लाना चाहिए जिससे यह फिर से जीवंत रह सकें जैसे कि पहले थे।

मैं प्रो. चमनलाल सप्रू का आभारी हूं जिन्होंने पूरी पाण्डुलिपि में अपनी विद्वत्तापूर्ण समीक्षा एवं संशोधन के साथ वर्तमान समय में प्रचलित सहज ध्वनि चिह्नों को जोड़कर पाठकों के लिए इसका पठन सुलभ कर दिया। मैं साथ ही श्री त्रिलोकीनाथ धर 'कुन्दन' का भी आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक में संकलित संस्कृत श्लोकों को शुद्ध रूप में प्रस्तुत किया। श्री ए.एन. कौल साहिब का भी सत्परामर्श एवं सहयोग देने के लिए ऋणी हूं। उक्त महानुभावों ने बड़ी निष्ठा एवं श्रद्धा से सहयोग दिया। माता शारिका अवश्य ही उन पर अनुग्रह करेंगी।

'कर्म' जीवन का सार है। देवादिदेव गणेश मेरे दैवी पुरोहित हैं। शारिका आद्य शक्ति एवं सृष्टि की जननी हैं। भगवान कृष्ण रक्षक हैं।

मैं आनंदातिरेक से परमेश्वर को पुकारता हूं और उनकी सहायता का आह्वाण करता हूं।

बड़ी विनम्रता के साथ मैं प्रस्तुत संकलन अपने गुरूदेव श्रीमत् स्वामी प्रेमानंद पुरी जी (मौनी बाबा) और अपने पिता पंडित जिया लाल कौल को समर्पित करता हूं। ऊँ शांतिः ऊँ शांतिः ऊँ शांति।

ऊँ श्री भगवते नमः

रोशन लाल कौल

बी-40 एस.एफ.एस. फ्लैट्स, शेख सराय — फेज-1
नई दिल्ली-110 017 टेलि. नं. 601 6105

ॐ

नित्य प्रार्थना विधिः

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं
प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये।
अभिप्रीत्यार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ॐ

ॐ गौरी पुत्रं त्रिनेत्रं गज मुख सहितम्
नाग यज्ञोपवीतं। पद्माक्षं सर्व
भक्षं, सकल जनप्रियम, सर्व गन्धर्व पूजितम ॥
सम्पूर्ण बाल चन्द्रं वरदम अति फलम
हन्ति कंसासुराणां
हेरंबं आदि देवं गणपतिं
वल्लभं श्री सिद्धिदाता गणेशम्

– 0 –

सरस्वती त्रिपूरसुन्दरी ज़गतमाता भुवनीश्वरी
छख आसवुंन्य चुॅय,
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र सिर्य चन्द्रम कुमार विष्णु,
गॉणीश छी पूज़ान च्येंय
अंदर नेंबर वॉतिथ त्रिभुवनस सॉर्यसुॅय,
गुल्य गंडिथ म्योन प्रणाम ऑस्यनय चेंय ॥

– 0 –

येंम्य सुन्द प्रभाव छुम में हदुॅ रोंस आसुवुन,
भगवान तुॅ शीष नाग छिनुॅ वनिथ ह्यकान।

ब्रह्मा तु शंकर छि नुँ तिम ति ज़ेय प्यठ,
ताक़त सोंस महिमा चोन ज़ानान।।
सोंय चण्डी दीवी रॅछतनम में
योंस सॉर्यसुॅय ज़गतस छय पालान,
दीतनम में तिछ़ बोंद्ध यिहय मॉज दीवी
येंमि सूॅत्य अशोंभ भय नाश छि सपदान
आसय शरण चे़ं पादन व्यनयि किन्य छुस नमिथुॅय
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम चु़य
व्याकुलतायि मंज़ बजि आपदायि मंज़,
ग्रेह पीड़ायि मंज़ माता रछतम च़य।

ॐ

हे दीवी छख चु़ॅ, त्रेम्बक पत्नी,
च़ेय वनान सती, च़ेय पार्वती।
त्रेयलूकी हन्ज़ माता भगवती,
चु़ॅय वर दिवान छख चु़ॅय मृडॉनी
च़यु त्रिपोर सोंन्दरी, चु़ॅय रोंदरानी,
चु़ॅय भयानक रूप च़य शर वरी।
चु़ॅय चण्डी चु़ॅय त्रिशूल दारान,
चु़ॅय कलि कालस नाश करॉनी

अॅस्य हय आमुॅत्य बनिथ काह घर च़्यथ बनिथ,
छुस प्यवान च़ेंय पादन तल परन ॥
आसय शरण च़ें पादन विनयि किन्य छुस नमिथुॅय,
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम चुॅय।
व्याकुलतायि मंज़ बजि हय आपदायि मंज़,
ग्रेंह पीड़ायि मंज़ माता रछतम चुॅय ॥

ॐ

हे देवी चानि दर्शनुक में अभिलाश,
प्रथ विज़ि नेत्रनुॅय मंज़ में रोज़तम।
चॉन्य गोंण बोज़नुक तमना में ऑस्यतन,
प्रथ विज़ि रूज़्यतन म्यान्यन कनन।
च़ॉन्य नाम सुमरन च़्यतस मंज़ में गरि गरि,
च़ॉन्य पादि पूज़ा म्यान्यन अथन।
चॉन्य कीर्तन करवुॅनुय रूज़्यतन में वॉणी,
वोंपासना चॉनी कम मतुॅ मे' गॅछ़्यतन।
अॅस्य हय आमुॅत्य बनिथ काह घर च़्यथ बनिथ,
छुस प्यवान च़ेंय हय पादन तल परन।
आसय शरण च़ें पादन व्यनयि किन्य छुस नॅमिथुॅय
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम चुॅय।

व्याकुलतायि मंज़ बजि आपदायि मंज़,
ग्रेंह पीड़ायि मन्ज़ माता रछतम च्रुय।

- 0 -

युस पोंरूष अकि लटि करि च़ेंय कुन प्रणाम,
तसुँन्ज़े ख्रावि प्यठ छु येन्द्राज़ नमान।
युस पोंरूष करान आसि माता चॉन्य पूज़ा,
तस पोंरूषस पूज़ान दीव अखिला
युस पोंरूष करान आसि माता चॉनी तोंता,
देवता येंम्य सुंजुय अस्तुती करान।
युस पोंरूष करान आसि माता चोनुय ध्यान
स्वर्गचि अछ़रछ़ तस छे सुमरान।
ऑस्य हय आमुॅत्य बनिथ, काह घर च्यथ बनिथ,
छुस प्यवान च़ेय हय पादन तल परन
आसय शरण च़ें पादन विनयि किन्य छुस नमिथय
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम च्रुय॥
व्याकुलतायि मंज़ बजि आपदायि मंज़,
ग्रेंह पीड़ायि मंज़ माता रछतम च्रुय॥

ॐ

मॉज भवॉन्य लक्ष्मी वश करनस प्यठ,
पादुच गर्द है चॉन्य ताकत सोंस।
चाने प्रनाम विज़ि लगि यिमन ललाटस,
पादुच गर्द है चॉन्य बड़ि, शानु सोंस।
सोय पादुच गर्द गालि दोंर अक्षर तस,
ज़गतस मंज़ बनी सु जयकार सोंस।
अॅस्य हय आमुत्य बॅनिथ, काह घर च़्यथ बनिथ,
छुस प्यवान च़ेंय हय पादन तल परन।
आसय शरण च़े पादन विनयि किन्य छुस नॅमिथुय,
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम च़ुय।
व्याकुलतायि मंज़ बजि आपदायि मंज़,
ग्रेंह पीड़ायि मंज़ माता रछतम च़ुॅय॥

ॐ

कम सना दोंख छि तिम ही दोंखन गालवुॅन्य,
यिम नुॅ गलनय में चानि सुमरनि सूॅत्य।
कोंस छे नेक नॉमी योंस कोंलस छे खारवुन्य,

योंस न बनि चाने तोंतायि सूत्य ॥
कोंस कोंस छें स्यदी ही सेधि दात्री,
योंस न प्राप्त सपदि चानि पूज़ायि सॅूत्य ।
कम कम छि तिम यूग ही ज़गथ अम्बा,
यिम न स्यद बनन चानि च़्यनतन सूत्य ।
अॅस्य हय आमॅुत्य बनिथ, काह घर च़्यथ बनिथ,
छुस प्यवान च़ेय हय पादन तल परन ।
आसय शरण च़ें पादन विनयि किन्य छुस नमिथुय,
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम च़ुय ।
व्याकुलतायि मंज़ बजि आपदायि मन्ज़,
ग्रेंह पीड़ायि मन्ज़ माता रछतम च़ॅुय ।

ॐ

कुपुत्रो जायेत, क्वचित् अपि कुमाता न भवति ।
अजानन्तो यान्तिक्षयमवश् मन्योन्य कलहै ।
अमी माया ग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः ।
जगन्माता जन्म ज्वर भय तमःकौमदि वयं ।
नमस्ते कुर्वाणःशरणमुपयामो भगवतीम् ।

ॐ

मन्त्र त तन्त्र छुसन केंह ति ज़ानान,
ज़ानान छुसय न माता चॉन्य महिमा
आराधना तुँ ध्यान माता छुसन केंह ति ज़ानान
ज़ानान छुसय न माता चॉनी तोंता।
मोंदरायि चाने छुस न, केंह ति ज़ानान,
ज़ानान छुसय न माता चोन लीपन।
बॅड़हिश योंखती छुसय न माता ज़ानान,
च़ेंय पत पतु पकिथ कलेशस नाश सपदान।
कोपोंत्र छु ज़गतस मंज़ हय पॉदु सपदान,
माता कोंमाता ज़ांह ति छन बनान
अॅस्य हय आमुत्य बॅनिथ, काह घर च़्यथ बनिथ,
छुस प्यवान च़ेय हय पादनतल परन।
आसय शरण च़े पादन विनयि किन्य छुस नमिथय,
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम च़ुय।
व्याकुलतायि मंज़ बजि आपदायि मंज़,
ग्रेह पीड़ायि मंज़ माता रछतम च़ुय।

ॐ

ही माता चॉन्य च़रणु सीवा न करुम पथकुन,
न वुन्यक्यन करान।
चानि बापथ कोंरूम न खर्च अज़ताम,
न वुन्यक्यन च़ेय पथ छुस बों खर्चान।
तोति छखय सोंय मॉज़ यस है
म्योन बेहद मोहबत,
योंस, गरि गरि छम रछान।
कोंपोंत्र छु ज़गतस मंज़ हय पॉदु सपदान,
माता कोंमाता ज़ांह ति छनु बनान।
अॅस्य हय आमुॅत्य बॅनिथ, काह घर च़्यथ बॅनिथ,
छुस प्यवान च़ेंय हय पादन तल परण।
आसय शरण च़ें पादन विनयि किन्य छुस नमिथुॅय,
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम च़ुय
व्याकुलतायि मन्ज़ बजि आपदायि मंज़,
ग्रेह पीड़ायि मंज़ माता रछतम च़ुय।

ॐ

ही मूड़ क्याज़ि छुख बेफॉयद सपदिथ,
पननिस शरीरस तकलीफ़ दिवान।
यगनि किन्य, दानुॅ किन्य बजि दक्षिनायि किन्य,
क्याज़ि छुख घरुॅ, पनुन ख्वॉली करान।
गछ़ शरण चु माजि शारिकायि प्राव भक्ती,
हें करुन्य तसुॅन्ज़य पादि, सीवा।
अद हा फोलिमति पॅम्पोशि नेंत्रव सोंस,
लक्ष्मी ब्रोंठ ब्रोंठ छय दोरान।
ॲस्य हय आमुत्य बनिथ, काह घर च़्यथ बनिथ,
छुस प्यवान च़ेंय हय पादन तल परण।
आसय शरण च़ें पादन विनयिकिन्य छुस नमिथुॅय,
व्याकोंलतायि मंज़ माता रछतम चुय।
व्याकोंलतायि मन्ज़ बजि आपदायि, मंज़,
ग्रेह पीड़ायि मंज़ माता रछतम चुॅय।

ॐ

मूढ छुस बुॅ दोंखवुॅय सूतिन बॅरिथ छुस,
बुजरकि दोषि किन्य खोच़ान छुस।
सामरथ रोंस्तुय न्यरबल त केवल,
आसरस चॉनिस थफ करिथ छुस।
ही दीवी जल बनाव में त्युथ
युथ ब प्रावय सारिवुय वोंतम भोग।
त्रॉविथ यिमय दोंख मार्ग सॉरी,
रोज़हय बुॅ चान्यन च़रणन लोर।
ॲस्य हय आमुॅत्य बॅनिथ, काह घर च़्यथ बनिथ,
छुस प्यवान च़ेय हय पादन तल परण।
आसय शरण च़ें पादन विनयिकिन्य छुस नमिथुॅय,
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम च़ुय।
व्याकुलतायि मन्ज़ बजि आपदायि मंज़,
ग्रेंह पीड़ायि मंज़ माता रछतम च़ुॅय।

ॐ

मतलब छख चु दिवान दुश्मनन चुँ गालान,
आपदायन छख चु नाश करान।
ऑदियन चुँ गालान व्यॉदियन शोंमरावान,
सोंख त सम्पदा छख व्यस्तारान।
अन्दरिम्य दोंख तुँ दॉद्य ज़ीवस चु गालान,
यिम हय अकि लटि माता नाव चोन सोंरान
तिम कमसना पापव निश छि मोंकलान,
यिम सदा चें कुन गुल्य गंड़िथ छि रोज़ान।
ॲस्य हय आमुॅत्य बनिथ, काह घर च्यथ बनिथ,
छुस प्यवान चेंय हय पादन तल परण।
आसय शरण चें पादन विनयि किन्य छुस नॅम्पिथय,
व्याकोंलतायि मंज़ माता रछतम चुॅय।
व्याकोंलतायि मन्ज़ं बजि आपदायि मंज़,
ग्रेंह पीड़ायि मंज़ माता रछतम चुय।

ॐ

ही दुर्गा चानि सुमरनि ज़ीवस,
सॉरी भय छी नाश सपदान।
वारूँ पॉठिन करय बु चॉनिय सुमरना,
तेंलि छख ज्ञानुँच वथ में हावान।
दारिद्र भावय बेयि कठिन्य दोंख तुँ दॉद्य,
च़ेंय रोंस कुसबी छुम में दूर करान।
वोंपकार छख करान तिमन सारिनय ज़ीवन,
यिम सदा च़ें कुन गुल्य गंड़िथ छि रोज़ान।
अँस्य हय आमुँत्य बनिथ, काह घर च़्यथ बनिथ,
छुस प्यवान च़ेंय हय पादन तल परण।
आसय शरण च़ें पादन विनयिकिन्य छुस नॅमिथय,
व्याकोंलतायि मंज़ माता रछतम चुॅय।
व्याकोलतायि मन्ज़ बजि आपदायि मंज़,
ग्रेंह पीड़ायि मंज़ माता रछतम चुॅय।

ॐ

मन्त्र हीन ऑसिथ, क्रियाहीन ऑसिथ,
विधिहीन ऑसिथ में केन्ह यि पोंरूम।
वोंन्य हय तथ सॉरिसय ही परमीश्वरी,
कृपायि किन्य म्यें ऑरतिस माता बखशान।
कृपायि किन्य म्यें ऑरतिस,
क्षमायि किन्य म्यें ऑरतिस
दयायि किन्य म्यें ऑरतिस माता बखशान।
अॅस्य हय आमुॅत्य बुॅनिथ, काह घर च़्यथ बनिथ,
छुस प्यवान च़ेय हय पादन तल परण।
आसय शरण च़े' पादन विनयिकिन्य छुस नमिथुय,
व्याकोंलतायि मंज़ माता रछतम चुॅय।
व्याकोंलतायि मन्ज़ं बजि हय आपदायि मंज़,
ग्रेंह पीड़ायि मंज़ माता रछतम चुॅय।

ॐ

हेमज़ा सुतं भजे गणेश ईश नन्दनम्,
एक दंत वक्र तुण्ड नाग यज्ञ सूत्रकम्।
रक्त गात्र धूम्र नेत्र शुक्ल वस्त्र शोभितम्,
कल्प वृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गज़ाननम्।
पाशि पाणि चक्र पाणि मूषकादि रोहिणम्,
अग्नि कोटि सूर्य ज्योति वज्र कोटि निर्मलम्।
चित्रभाल भक्तिजाल बालचन्द्र शोभितम्,
कल्प वृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।
विश्व वीर्य विश्व सूर्य विश्व कर्म निर्मलम्,
विश्व हर्ता विश्व कर्ता यत्र तत्र पूजितम्।
चतुर्भुजं चतुर्मुखं सेवितं चतुर्युगम्,
कल्प वृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।
भूत भव्य हव्य कव्य भृगु भार्गवार्चितम्,
दिव्य वह्नि काल जाल लोक पाल वन्दितम्।
पूर्ण ब्रह्म सूर्य वर्ण पुरुषं पुरान्तकम,
कल्प वृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गज़ाननम।
ऋद्धि बुद्धि अष्ट सिद्धि नवनिधान दायकम्।
यज्ञ कर्म सर्व धर्म वर्ण वर्ण अर्चितम्॥

भूत धूम्र दुष्ट मुष्ट दायकम विनायकम,
कल्प वृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।
नमोस्तुते गणेश्वरम् नमोस्तुते लम्बोदरम्,
कल्प वृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।

ॐ

विषभय विनाशम् दुख दरिद्र नाशनम्,
सकल सुख विकासम श्रीमहागणेशम नमामि।
महागणपतिम देवम् महा सत्यम् महाबलम्।
महा विघ्नहरं देवम् नमामि ऋण भक्ति।

॥ देवी स्तुति ॥

ॐ लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां,
लोकातीतै-योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुञ्जां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु रूहा-क्षीम् अहम्-ईड्ये॥

आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां,
पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरूषाणाम्।
ईशीम्-ईशाङ्गार्ध हरां तां तनुमध्यां,
गौरीम-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये॥

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां,
नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तडित्-आभां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम्-अहम् ईड्ये॥

चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला-लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित पादाम्बुजयुग्मां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम्-अहम् ईड्ये॥

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला,
सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम्-अहम् ईड्ये॥

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम्-अहम् ईड्ये॥

प्रातःकाले भावविशुद्धिं विदधानो,
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पत्तिम्–उच्चैः शिवभक्तिं,
तस्या–वश्यं पर्वत–पुत्री विदधाति॥

– 0 –

सर्वमंगल मांगल्ये, शिवे–सर्वार्थ–साधिके
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते॥

ॐ

पुरहूत प्रियः कान्तः कामिनी पद्मलोचनः
प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गति नाशिनी
अघोर व्याधिनाशीच घोर दुःख निवारिनी
अष्टादशभुजां दुर्गां शारिका श्याम सुन्दरी,
निर्गुणी निशकली नित्ये, सतचिदानन्द रूपिनी।
नमोस्तुते महाराज्ञी, पाहि माम् शरणा गतम्,
ज्वालामुखी महा ज्वाले, ज्वाला पिंगल लोचने,
ज्वाला तेजी महा तेजी, ज्वालमुखी नमोस्तुते॥

शारदा वरदा देवी मोक्ष दात्री सरस्वती,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमोनमः।
श्री शारिके शरण्ये त्वम् मयि दासे दया कुरू।
ऋणं रोगं भयं शोकं रिपुनाशाय सत्वरं।

प्रनतोस्मि महादेव प्रपन्नोस्मि सदाशिव
निवारय महा मृत्युं, मृत्यञ्ज्य नमोस्तुते।
हर शम्भु महादेवः विश्वेश्वर वल्लभ,
शिव शंकर, सर्व आत्मा नीलकण्ठ नमोस्तुते।
गौरी पति रूपाच्च शरणागत वत्सलः,
निवारय महामृत्युं मृत्युञ्ज्य नमोस्तुते।

नमो नमो गज़ेन्द्राय एक दंतदराय च,
नमः ईश्वर पुत्राय श्री गणेशाय नमोनमः।

ॐ

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सवार्थ साधिके,
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।
महाबले महोत्साहे महाभय विनाशिनी,
त्राहि माम देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रुनाम भय वरद्धिनी,
अचिन्त्य रूप चरित्रे सर्व शत्रु विनाशिनी,
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि – जषो जयः ॥
गौरी पुत्रम त्रिनेत्रम, गजमुख सहितम,
नाग यज्ञोपवीतम, पद्माक्षम सर्वभक्षम,
सकल जन प्रियम सर्व गन्धर्व पूजितम,
संपूर्णं बाल चन्द्रम वरदं अति फलम्,
हंति कंसासुराणां
हे रम्भम आदि देवम् गणपति वल्लभं
सिद्धि दाता, श्री महागणेशम्,
हेरम्भम आदि देवम् गणिपति वलभं
सिद्धि दाता टाठि श्री गणेशम् ॥

ॐ

श्री राज, राजेश्वरी ऑमुत्य शरण अस्य च़्वें छी।
पूज़ायि लागोय पंपोश गुलाब मादल त ही।
गौरीम अम्बाम अम्बरूहाक्षीम अहम ईड़ये।

– 0 –

ज़गत अम्बा च़ुॅय छख मंज वदनस मंज़ असुॅनाव,
निश्बोंद्ध छुस बुॅ दयायि हुन्द दामन–में प्यठ त्राव।
कल्याण सोंस्त थाव सूत्य शुर्यन बड़यन
छी श्री राज राजेश्वरी आमुॅत्य शरण ॲस्य च़ें छी॥

– 0 –

बोंद्ध छमनुॅ वातान चान्यन रंगन कम रंग छी,
कामीश्वरी च़ेंय मनिकामनायन ति मंगान छी,
च़ेय प्यठ ॲस्य आयि ॲस्य आयि भेनेर बरान छी।

श्री राज़ राज़ेश्वरी ऑमुत्य शरण छी।
पूजायि लागोय पंपोश गुलाब मादल तु ही॥

- 0 -

ओंकार रूपय च़खॅर नागॅ स्योंद नेरान
तिहुन्ज़य छि रीखा च़ोपार्य त्रेन भवनन फेरान
यूगी त ज्ञॉनी सुय ध्यान च़ोनुॅय दारान छी।
श्री राज़ राज़ेश्वरी आमुॅत्य शरण छी,
पूज़ायि लागोय पंपोश गुलाब मादल तु ही॥

- 0 -

ऊँ माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती,
काली कला मालिनी।
मातंगी विजया जया भगवती,
देवी शिवा शाम्भवी।
शक्ति शंकर वल्लभा त्रिनयना,
वाक् वादिनी भैर वी।
ह्रीं कारी त्रिपुरा परा परमयी,
माता कुमारीत्यसि। *(तीन बार पढ़ना)*

जयन्ति मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा रूद्रः क्षमः दात्री स्वधा स्वाहा नमोस्तुते।

- 0 -

मोज भक्तानु ग्रह कारिणी भगवती,
देवादि देवीश्वरी।
दीनानाथ कृपावती स जननी,
भक्तानुरक्ता सती।

- 0 -

ऊँकाराक्षर वासिनी सुरेन्ताम्
सर्व ईश्वरी सर्वदा
भूयात् नः वरदा सदा वरदा कामेश्वरी,
मोक्षदा।

श्री राज़ राज़ेश्वरी आमुॅत्य शरण च़ेय छी,
पूज़ायि लागोय पंपोश गुलाब मादल त ही ॥
गौरीम् अम्बाम अम्बरु हाक्षीम अहमईड़ी ॥

– ० –

महा माया, च़ुॅय छख, च़ठ असि माया ज़ाल,
असि वोलमुॅत ग्रहस्त काल सर्फन नाल ॥
लॅग्यमुत्य छि सॉरी पनन्यन गरन छी,
श्री राज़ राज़ेश्वरी आमुॅत्य शरण च़े छी,
पूज़ायि लागोय पंपोश गुलाब मादल ती ही ॥

– ० –

बाहन सिर्यण ज़ॅचन चान्यन हुन्द प्रकाश ।
च़रण चॉन्य छी करान संकट गटि मंज़ गाश ॥
तिहन्ज़े गर्दि सूॅत्य देव मुकट जरन छी ।
श्री राज़ राज़ेश्वरी आमुॅत्य शरण च़ें छी,
पूज़ायि लागोय पंपोश गुलाब मादल त ही ॥

– ० –

लूकालूकन हुॅन्द्य सतज़न कारण देवगण,
सिंहासनस चॉनिस छुस दिवान प्रदिक्षण।
परम दामुॅक्य पोरूष च़े प्यवान परन छी,
श्री राज़ राज़ेश्वरी ऑमुत्य शरण च़ें छी।
पूज़ायि लागोय पंपोश गुलाब मादल तु ही।

– 0 –

प्रसाद कर गाल ज़न्मादि ज़न्मन हुॅन्द्य अपराध,
सब्ज़ रंगै ज़लै मंज़ हाव पंपोश पाद।
यिम तिम सोंरान यथ भवसरस तरान छी।
श्री राज़ राज़ेश्वरी आमुॅत्य शरण च़ें छी,
पूज़ायि लागोय पंपोश गुलाब मादल तु ही॥

– 0 –

पनन्यन भक्त्यन, दासन हुन्दुय पेयनय च़े पास
तिहिन्दे पासै कोंकर्मण हुन्ज़ गट असि कास।
ज्योति स्वरूप हाव च़े छय विभूतिश्वरन्य द्रुॅय।

श्री राज़ राज़ेश्वरी ऑमुत्य शरण छी।
पूजायि लागोय पंपोश गुलाब मादल तु ही ॥

– 0 –

ओंकार रूपय च़रव़ॅर नागॅ स्योंद नेरान
तिहुन्ज़य छि रीखा च़ोपार्य त्रेन भवनन फेरान
यूगी त ज्ञॉनी सुय ध्यान च़ोनुॅय दारान छी।
श्री राज़ राज़ेश्वरी आमुॅत्य शरण छी,
पूज़ायि लागोय पंपोश गुलाब मादल तु ही ॥

– 0 –

ऊँ माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती,
काली कला मालिनी।
मातंगी विजया जया भगवती,
देवी शिवा शाम्भवी।
शक्ति शंकर वल्लभा त्रिनयना,
वाक् वादिनी भैर वी।
ह्रीं कारी त्रिपुरा परा परमयी,
माता कुमारीत्यसि। *(तीन बार पढ़ना)*

जयन्ति मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा रूद्रः क्षमः दात्री स्वधा स्वाहा नमोस्तुते।

– 0 –

मोज भक्तानु ग्रह कारिणी भगवती,
देवादि देवीश्वरी।
दीनानाथ कृपावती स जननी,
भक्तानुरक्ता सती।

– 0 –

ऊँकाराक्षर वासिनी सुरेन्ताम्
सर्व ईश्वरी सर्वदा
भूयात् नः वरदा सदा वरदा कामेश्वरी,
मोक्षदा।

भूयात् नः वरदा सदा वरदा कामेश्वरी
कामदा।
भूयात् नः वरदा सदा वरदा कामेश्वरी,
सिद्धिदा॥

- 0 -

सुन्दरी वे ब्रह्मवो भवनानि पतिम,
सम्पति कल्प तर वस्त्रुपरे जयन्ति,
ईते कवेत कुमद प्रकार बोध,
पूर्णेणा वस्त्रया जगत् जननी प्रणाम।

- 0 -

लक्ष्मी वशी कर्ण चूर्ण सहोदराणि,
त्वत् पाद, पंकज रजासिं चिरं जयन्ति।
यानि प्रणामि मिलितानि नृणाम् ललाटे,
लुम्पन्ति दैव लिखितानि दुराक्षराणि।
(तीन बार पढ़ें)

ॐ

क्षणसुॅय मंज़ दोंख त संकट
दूर करतय चॗु म्यॉनी।
ॐ श्रीमत ही भवॉनी छय में आशा चॉनी,
छय मे आशा बॅड़ वोमेदा छय में आशा चॉनी,
क्षणसुॅय मंज़ दोंख त संकट दूर करतय चॗॅ सॉनी
छय चे़ं अर्दाह बोंज़ भवॉनी,
छख सुॅहस प्यठ च़ॅय सवार।
अॅन्द्य अॅन्द्य छी दीवॅताह सॉरी,
छी करान चे़ंय ज़ार पार।
अष्ट सिद्धी ऑदीन छी,
पाद चॉन्य न्यथ छलॉनी
क्षणसुॅय मन्ज़ दोंख तुं संकट,
दूर कर तय चॗॅ सॉनी।
सिरियि तय बेंयि चन्द्रमुं छी,
प्रारान चे़ंय हुकमस।
कर करि मॉज भवॉन्य ऑज्ञा,

प्रकाश बवि ज़गतस।
चानि प्रकाशि किन्य छु सन्तोंष्ट,
त्रिभवन रोज़ॉनी।
क्षणसुॅय मंज़ दोंख तुॅ संकट,
दूर करतय चुॅ सॉनी।
येंलि येन्द्राज़ बेयि दीव अन्य
तंग महिशासोंरनुॅय
येन्द्राज़ ओय चेय शरनय,
पादन चे प्योंय परनुॅय॥
पतुॅ पतुॅ तस दीवताह आयि,
फ्रकहॅत्य तुॅ दोरॉनी।
क्षणसुॅय मंज़ दोंख तु संकट,
दूर करतय चुॅ सॉनी॥
बूज़िथ तिहुन्द हाल सोरूय,
अदुॅ महिशासोरसुॅय।
वातनोवथन पाताल येंलि,
ज़ीर दिचथस खोरसुॅय।
मोकलॉव्यथख दीव भयि निशि,
कॅरथख मेहरबॉनी॥
क्षणसुॅय मंज़ दोंख तुॅ संकट,
दूर करतय चुॅ सॉनी।

ऊँ शब्द छख सर्व शक्तिमान,
महामाय च़ेंय वनान।
काम क्रूध लूभ मोह तुॅ अन्धकार,
भक्त्यन छख चॖुॅ कासान।
चॉनी भक्तुय शिव शक्ति रूप,
ध्यान चोन दारॉनी।
क्षणसुय मंज़ दोंख तुॅ संकट,
दूर करतय चॖुॅ सॉनी॥
बोज़ान छख व्यनती मॉज,
येति चोनुय छु दरबार।
चानि हुकमुॅ सूॅत्य सारि ज़गतुक
छुय चलान अदुॅ कारबार।
अॅस्य ति आमुॅत्य अर्ज़ करने,
दोरान त लारॉनी॥
क्षणसुॅय मंज़ दोंख तुॅ संकट,
दूर करतय चॖुॅ सॉनी॥
माता बोज़तम छुॅम में हाजथ,
बॅड़ भक्ती चॉनी।
गरि गरि रोज़तम में सन्मोख,
हृदयस मंज़ भवॉनी॥

सरस्वती हुन्द प्रसाद युथ में बनि,
नेर्यम अमर्यथ वॉणी ॥
क्षणसुॅय मंज़ दोंख तुॅ संकट,
दूर करतय चु मयॉनी ॥

ॐ

भक्तानु ग्रहकारिनी भगवती,
देवादि देवीश्वरी।
दीनानाथ कृपावती स्वजननी,
भक्तानुरक्ता सती।
ओंकाराक्षर वासिनी सुख्ताम,
सर्वेश्वरी सर्वदा।
भूयात नः वरदा सदा अभयदा,
कामेश्वरी कामदा।
भूयात नः वरदा सदाय अभयदा,
मोक्षीश्वरी मोक्षदा।

ॐ

अजानन्तो यान्ति क्षयमवश्यमन्योन्य कलहैः।
अमी माया ग्रन्थौ तव परिलुठनत समयिनः।

जगत माता जन्म ज्वर भय तमः कौमुदि! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम्,
माता पिता भ्राता सुहृद, अनुचरा सक्षम ग्रहनी।
वपुः पुत्रो मित्रम् धनम् अपि यदामाम वज हते
तदेम बेन्दानाम सपदि बियमोहाम तमत्युम
महाडथो तीषमय मातर नवकोर बिन्हा सन्धि करि
कुपुत्रो जायते क्वचिदयि कुमाता न भवति।

ॐ

सुन्देरिवे ब्रह्मभवो भवनादिपते,
सपत कल्प तरवस्त्रिपुरे जयन्ते।
एते कवेत्कुमद प्रक्राव बोध,
पुर्नेन्द्र वस्तुय जगतजननी प्रणामः॥

ॐ

मोज पराकन्दा बुॅ छुस चॉनिस बरस तल,
दिलुॅक्य मुश्किल भवॉनी करतम अज़ हल।
बुॅ छुस चॉनिस बरस तल हून्य सुन्द्य पॉठ्य,
म्यें छिमना चॉन्य छेंट्य लुकमय स्यठा टॉठ्य।

दया योंदवय करख मॉज क्याह गछ़ी कम,
चुँ छख पानय ब कुस छुस कासतम गम ॥

ॐ

मॉज व्याकुलतायि मंज़ बजिहय आपदायि मंज़।
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम चुॅय।
व्याकुलतायि मंज़ बजिहय आपदायिमंज़,
ग्रेंह पीड़ायि मंज़ माता रछतम चुॅय ॥
व्याकुलतायि मंज़ बजि हय शत्रुतायि मंज़,
च़ंच़लतायि मंज़ माता रछतम चुॅय ॥

ॐ

लक्ष्मी वशी करणचूर्ण सहोधराणे,
त्वत पाद पंकज रजाम सुचिरम जयन्ति।
याने प्रणामि मिलितानि निनाम ललाटे,
लुम्पन्ति दैव लिखितानि दुर अक्षराणि ॥

ॐ

बॅु मोजी केंन्ह न ज़ानै पूज़ चॉनी
दया कॅर्यज़्यम योंद मन्त्र मशम कांह।
दया कॅर्यज़्यम में मा चे़य रोंस्त छुम कांह,
क्षमा कॅर्यज़्यम में नय चे़य रोंस्त छुम कांह॥
चॖु कॅर्यज़्यम कामना स्यद, ही भवॉनी।
चॖु कॅर्यज़्यम कामना स्यद, ही सदा शिव॥
कडुम अमि गम मंज़ में रम्बवुन रव॥
में करतम कामना स्यद मॉज भवॉनी,
ज़न्म सोंफल में करतय मॉज भवॉनी।
दया धर्मय व्यचा़ंरय सूॅत्य वारय,
सहा रोज़तम दितम भवसर में तारय।
सहा रोज़तम त बोज़तम ज़ार पारय।
दया धर्मय व्यचा़रय सूॅत्य वारय।
सहा रोज़तम तॅु करतय म्योन चारा॥

ॐ

मंगुन छुम न तगान बोज़ुन तगान छुय,
लोंकुट शुर माजि यिथ पॉठ्य दोंद मंगान छुय।
में छम व्यनती कुनी वोन्य, ही भवॉनी।
बॅु रटहय हृदयस मंज़ पाद चॉनी।
बॅु करहय लोलॅु अशि सूॅत्य यिमन श्रान
छलय वथरय त वथरावय पनुन पान।
करान रोज़हय बु न्यथ, सुमरण यि चॉनी॥
सोंरान रोज़हय दोंहय, शिव शिव भवॉनी॥
यिहय व्यनती में माता, करतम मंज़ूर।
दितम माता परम सोंख, करतम दोंख दूर॥

ॐ

माता चॖ छख दाता।
करनावतारस चॖय सोंरिथ।
तारुम में तारस थफ करिथ॥
पारस बनावॅुम शेंशतॅुरस
नारस कॅरिथ गुलज़ारा।

काया छि म्यॉनी द्वारिका,
च्चुय छुख कृष्ण परमात्मा॥
मंगान सुदामा छुय भिक्षा,
सर्वेश्वरी यकबाल दिम।
मंगान अनाथा छुय भिक्षा,
सर्वेश्वरी यकबाल दिम।
माता च्चुय छख दाता,
रूगनाशनी, शत्रुनाशनी।

- 0 -

बोल शारिका माता की जय,
बोल राज्ञा माता की जय,
बोल ज्वाला माता की जय,
बोल गौरीश्वरी जी की जय॥
बोल सांचे दरबार की जय,
बोल सनातन धर्म की जय।
बोल सब संतों की जय॥
बोल माता दुर्गा की जय।
बोल जगदम्बा की जय।

ॐ

ॐ प्रनतोस्मि महादेव,
प्रपन्नोस्मि सदाशिव।
निंवारय महामृत्यु,
मृत्युंजय नमोस्तुते।

- 0 -

कर्पूर गौरम करुणावतारम्,
संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदारमन्तं हृदयारबिन्दे,
भवं भवानी सहितम नमामि।

- 0 -

माता भवानी च पिता भवानी,
बन्धु भवानी च गुरू भवानी।
विद्या भवानी द्रव्यनम भवानी,
यतो यतो यानि ततो भवानी॥

- 0 -

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रव्यणम त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम वासुदेव॥

ॐ

चु माता कासतम में ग़म।
बु लागय भाव कोसम॥
दितम दर्शुन च़ल्यम ग़म,
बु लागय भाव कोसम॥
दितम दर्शुन फ्वली में मन।
बॅु लागय भाव कोसम॥
में मॉजी आश चॉन्य छम,
बॅु लागय भाव कोसम॥
दया दृष्टी में करतम,
बॅु लागय भाव कोसम।
ब मा वोतुस चे़ निश ज़ांह,
में कॅरमय न पाठ पूज़ा।
तवय शरमन्दगी में छम,
बु लागय भाव कोसम्।
दितम दर्शुन च़ल्यम गम्
बॅु लागय भाव कोसम॥
च़ दीवी क्याज़ि रूठॅख,
खॅटिथ कथ जायि बीठख,

दितम दर्शुन च़ल्यम ग़म्
बुॅ लागय भाव कोसम ॥
गोंडन्य स्यद कर में वॉणी,
दोयुम दिम पॉर्यज़ॉनी।
त्रेयिम त्रेयलूकी मंज़ सम,
बुॅ लागय भाव कोसम।
दया दृष्टी में करतम,
बुॅ लागय भाव कोसम।
कोंरूथ चें च़ोन वीदन अन्द,
छु पाँच़्युम परमानन्द।
शेंयुम शिव रूप बासतम,
बु लागय भाव कोसम।
सतिम बासतम में सतरूप,
च़ल्यम अज्ञानुक कूफ,
दज्यम अन्दर ज्ञानुक दूॅप।
चे़ ड़ींशिथ दूर च़ल्यम यम,
बुॅ लागय भाव कोसम॥
दया कर आशा छम,
बुॅ लागय भाव कोसम।
दया दृष्टी में करतम,

बॅु लागय भावॅु कोसम॥
दज़ान छुय दुॅफ तुॅ कोफ़ूर,
वज़ान छुय साज़ संतूर।
नगारो साज़, मदहम,
बॅु लागय भावॅु कोसम।
दितम दर्शुन च़ल्यम ग़म,
बॅु लागय भावॅु कोसम॥
यिवान छी ॠश्य इत्यादिक,
करान दर्शुन छि सन्मोख।
बेदर रूज़िथ छि सर खम,
बॅु लागय भावॅु कोसम॥
दितम दर्शुन च़ल्यम ग़म,
बॅु लागय भावॅु कोसम।
दया दृष्टी में करतम,
बॅु लागय भावॅु कोसम॥
नेंथर चॉन्य पद्म वथॅर,
कलस प्यठ छु मोख्त छेथुॅर।
छु तथ निर्वाणुक थम,
बॅु लागय भावॅु कोसम।
दितम दर्शुन च़ल्यम ग़म,
बॅु लागय भावॅु कोसम॥

चु अष्टा दश भुज़ा छख,
में ते बोंड भोग सोज़हख।
चे़ं दीवी क्याह गछ़ी कम,
बॅु लागय भावॅु कोसम॥
दितम दर्शुन च़ल्यम ग़म,
ब़ु लागय भावॅु कोसम॥
छु बोंड दरबार चोनुय
वन्दय ना कबील क्रोनुय।
शोलु मारान छु व्यलकम,
बॅु लागय भाव कोसम॥
दितम दर्शुन च़ल्यम ग़म।
बॅु लागय भावॅु कोसम॥
वहरिथ छु मायायि हुन्द ज़ाल,
मूहन वोंलमुत छुम में ज़ाल।
अम्युक व्यस्तार बनतम्।
बॅु लागय भावॅु कोसम॥
दितम दर्शुन च़ल्यम ग़म,
ब़ॅु लागय भावॅु कोसम॥
नच़ान छी चं़ड तॅु मंड़,
तिमन दिख च़ पानय ड़ंड़।
प्यठय त्रावॅुख निरलम,

बॅु लागय भावॅु कोसम।
दितम दर्शुन च़ल्यम ग़म,
बॅु लागय भावॅु कोसम।
च़ुॅ छख शक्ती शिवस सूॅत्य,
छें यिछ़ अगनस अन्दर ज्यूत्य।
तम्युक मन्त्र छु शम दम,
बॅु लागय भावॅु कोसम॥
छु तथ मन्त्र बस ऊँ ऊँ
बॅु लागय भावॅु कोसम॥
दितम दर्शुन च़ल्यम ग़म,
बॅु लागय भावॅु कोसम।
दया दृष्टी में करतम,
बॅु लागय भावॅु कोसम॥
छु ऑठम दोह चोनुय,
बोज़ि फ़र्ययाद म्योनुय।
में सायस तल च़ुॅ रछतम,
बॅु लागय भावॅु कोसम।
दितम दर्शुन च़ल्यम ग़म,
बॅु लागय भावॅु कोसम।
दया दृष्टी में करतम,
बॅु लागय भावॅु कोसम॥

ॐ

अघोर व्याधिनाशीच, सर्व दुख निवारिणी,
मॉज अष्टादश भुजा दुर्गा, शारिका श्याम सुन्दरी।
निर्गुणी निश्कली नेति,
सत् चित आनन्द रूपिनी,
नमोस्तुते महाराज्ञे,
पाहिमाम शरणॉगतम्।
मॉज इष्ट दीवी कष्ट कासतम॥

ॐ

महाविद्या छख ज़गत माता,
महा लक्ष्मी छख शिव प्रिया,
विष्णु माया छख शिवा शान्ता,
माता सर्व शक्तिमान छख महा राज्ञा।

ॐ

आपदां अपहरतारम,दातारम् सुख सम्पदाम्।
गुणाभिरामम् श्री रामम्, भूयो भूयो नमामिऽहम्॥

- 0 -

श्री रामः पुरुषोतमः नर हरिः, नारायणः केशव।
गोविन्द गरुड़ ध्वजः, गुण निधि, दामोदरः माधव॥

- 0 -

श्री कृष्णा कमलापति युदपति, सीतापति, श्रीपति।
वैकुण्ठादि पति, चराचर पति, लक्ष्मी पतिः पाहि माम्॥

श्रीकृष्ण द्वारिका वासी, क्वासि यादव नन्दन।
इमां अवस्थां संप्राप्तम्, अनाथम् किम न रक्षसि॥

- 0 -

वसुदेवसुतं देवं कंस चाणूरमर्दनम।
देवकी परमानन्दम् कृष्णं वन्दे जगत गुरूम्॥

- 0 -

बोल कैलाशपति शिव शंकर की जय!
बोल रघुकुलपति, सीता पति की जय!
श्री रामचन्द्र जी की जय!
आनन्द कन्द श्री अयोध्यापति की जय
श्री रामचन्द्र महाराज की जय!
कल्याणकारी, जटाधारी स्वामी
अमरनाथ जी की जय!!

- 0 -

सरस्वती महा भागे, विद्ये कमल-लोचने,
विश्वरूपे विशालाक्षी, विद्यां देहि सरस्वती॥

ॐ

ब ज़ॉरी गोश थावतम ही भवॉनी,
च़ें रोंस्तुय रछवुन छुम ऩुं कांह ति सॉनी।
च़ें रोंस्तुय कस वनय कुस बोज़ि फ़र्ययाद,
च़े रोंस्तुय ग़म मंज़ कड्यम
कुस दिल करयम शाद।
च़ें दीवी सर वन्दय शेरस त पादन,
च़ुॅ दीवी गोश थवतम फ़र्ययादन।
च़ें दीवी आलमस प्यठ छय अमीरी,
च़ु दीवी पानुॅ कॅर्यज़्यम दस्तगीरी।
बुॅ छुस प्योमुत पथर अथरोंट करखाना,
में दिख दर्शुन त शोंभुॅ वर्शुन करखना।
दवा दाद्यन छोंकन म्यान्यन दिहमना,
में छम यी आश पादन तल हेहमना।
दवाये दर्द दीवी कर में पानय,
तबीबन हन्ज़ तबाबथ छम बहानय।
तबाबत चॉन्य छम मॉज अख दर्शुन,
दितम दर्शुन बुॅ करहय पोशि वर्शुन।
बराये आकबथ केंह छुमन ताशे,

चे़ं रोंस्तुय कस वनय मॉज कस बुॅ रोशय।
युथुय छुम ग़म तिछुॅय छम तंगदस्ती,
ब कोंदरथ कास्तम ग़म बेयि तंगदस्ती।
कुलुफ यिथ पॉठ्य छि मुच़रान कॉदखानन
गछ़ान ब्योंन ब्योंन छि तिम पनन्यन मकानन।
तिथय पॉठ्य ग़म मंज़ करतम में आबाद,
छुसय फर्ययॉद्य आमुत बोज़तम ज़ारा।
कलम तुल कर्म लीखा म्यॉन्य नॅव लेख,
ललाटस म्यॉनिस हितकारुॅक्य अछर लेख।
वुछख यिम हॅल्य अछर तिम नहवनाव,
छि यिम सेंद्य सेंद्य त तिम सोबूथ्य थाव
छि यिम पांच़य अछर लेखन्य छिनुॅ ज़्याद,
गोंडन्य मॉज दूर करतम भूमि प्यठ व्याद।
दोयुम यी शत्रु कांह पोरून गोंछुमन।
असर मॉरिथ त्रेयुम रोशुन गोंछुमन।
छें चू़रिम कथ यिहय म्यॉनिस मनस मंज़।
रछुम पनन्यन पद्यन तल छुम गोमुत क्रंज़,
यि पॉच़िम प्राण म्योन लारान पतय छुय।
शोंभ दर्शुन त अमर्यतुॅ वर्शुन करूम च़्युॅय।
च़्यु शेरस प्यठ सवार छख पान नेरान,
जहानस सॉर्यसुय छख पान फेरान।

चे़ं छुय वोनमुत ब छस बोज़ान तसुंन्द्य ज़ार।
येमिस नय आसि वननस कोंसि निशि वार।
ख़बर छा कोनुं छख अदुं म्योन बोज़ान,
गयम मा ज़्यव में कॅज तव छखन बोज़ान।
सतन भवनन हन्ज़ुॅय छख आदि शक्ती,
शरण आमुत, छुसय मोज दिम में भक्ती।
बुॅ माता योंद चे़ निश कुनि चे़ीर्य वातय,
में मतुॅ मॅशरावतम मॉज कुनि सातय।
चे़ निश वॉतिथ गछ़ान छुन कांह ति महरूम,
पनुन अथ डालतम छुसना ब मासूम।
पराकन्दह छुसय चॉनिस बरस तल,
दिलुॅक्य मुश्किल भवॉनी करत मे हल।
ब छुस चॉनिस बरस तल हून्य सुॅन्द्य पॉठ्य,
में छिमना चॉन्य छे़ंट्य लुकमय स्यठा टॉठ्य,
दया योंदवय करख मॉज क्याह गछ़ी कम,
चुॅ छख पानय बुॅ कुस छुस कासतम ग़म।
यि मोंगमय मॉज भवॉनी ती दितम में,
वन्दय ज़ुव जान तुॅ प्राण अर्पन करय चे़य।
म वुछ पापन चुॅ म्यान्यन कुन भवॉनी,
न वुछ शापन चुॅ म्यान्यन कुन भवॉनी।
चे़ं रोंस्तुय कस सना कुन कर बज़ारी।

च़ॅु छखना आसवॅुन्य त्रेयलूकी सॉमी।
क्षमा यस प्यठ करख तस क्याह छु परवाय।
दया यस प्यठ करख तस क्याह छु परवाय॥
असथ त्रोविथ सतस कुन तस गनी माय॥
च़ॅु यस भक्तिस दिख पादन तलय जाय।
मनॅुक्य पम्पोश बॅु लागय पादि कमलन।
दिलुक्य व्यन पोश बॅु लागय चरण कमलन।
च़ॅु कन थवतम में फ़र्यादन त नादन।
बॅु माजी मीठ्य दिमहय लोल पादन।
बॅु लागय शेरि लक्ष्मी भावॅु व्यन पोश,
बॅु लागय पादि कमलन भावॅु पम्पोश।
सु भक्ती प्रावि परमानन्द त गछ़ि खोश।
दया करतम च़ॅु छखना सर्व व्यापक,
मुर्खताई किन्य कोर मे क्याह क्याह अपुज़ पोज,
खबर कमि भावनायि किन्य में सोर अपुज पोंज़।
गोंणन चान्यन हुन्दुय सोरूय यि कीर्तन।
च़ॅु थव मन्ज़ूर म्यॉनी वील ज़ॉरी।
दया रूपी ब लगहय पॉर्य पॉरी।
भक्तय चॉन्य यिम परन चॉन्य सतगोण।
लबन तिम परम सोंख तय मूक्ष प्रावन॥

ॐ

प्रातः काल आव मेति अनत गाश मति।
छम चॉन्य आश मति पूर्ण कर॥
लटि मोंख हाव मुह गटि करत नाश मति
छम चॉन्य आश मति पूर्ण कर॥ 0॥
ज़न्मादि ज़न्मन ग्यूर आम फेरान,
छुस हालि हॉरान डेशत कर।
जल हाव मोंख पनुन छुमन बरदाश्त मति॥
छम चॉन्य आश मति पूर्ण कर॥ 0॥
भक्ति भाव सॅूतिन वति चानि नेरय,
कति छुख आसान पॉगाम सोज़।
नत दिम पननुय प्रोन बरदाश्त मति॥
छम चॉन्य आश मति पूर्ण कर॥ 0॥
मुह गटि मंज़ छुस वथ छमनॅु ईवान,
सतगोंर हावतम सतची वथ।
वथ हाव नोंन त्राव सिर्य प्रकाश मति॥
छम चॉन्य आश मति पूर्ण कर॥ 0॥

हनि हनि फ्यूरूस ह्यथ मनकामन,
शहरन त गामन कति आसि यार।
छुख पाताल किन छुख आकाश मति।।
छम चॉन्य आश मति पूर्ण कर।। ० ।।
न्यर वासन वनत कति चोन आसन,
अंधकार कासतम वन्दयो प्राण।
करतम सोद्य वानिन्य हिश बॉश मति।
छम चॉन्य आश मति पूर्ण कर।। ० ।।
कल्पनायि रॅस्यत्यो कलॅ हो वन्दयो,
कलि चानि राव्यम नेन्दर त नेह।
वोलुॅ वोन्य विष्णस चलि अभिलाश मति।।
छम चॉन्य आश मति पूर्ण कर।। ० ।।

ॐ

च़ुॅय क्षय करान अपराधनय,
च़ुॅय मोक्ष सेद्यन सादनय।
कन थव च म्यॉन्यन नादनुॅय॥
श्री शारिका दीवी नमः॥ 0॥
युस चानि ड़ेड़ि गव अन्दर,
तॅम्य त्रोव समसारूक बंधन।
समसार सोरूय क्रूठ च़ेन॥
श्री शारिका दीवी नमः॥ 0॥
रछतम ब छुस नारस अन्दर,
यमि नारुॅ मंज़ कड़तम न्यबर।
रछतम रछान माता बचन॥
श्री शारिका दीवी नमः॥ 0॥
प्योमुत बुॅ छुस कॅन्ड्य ज़ालसुॅय,
गोमुत ब छुस वश कालसुॅय।
कालुक सरूफ़ छुम नालसुॅय॥
श्री शारिका दीवी नमः॥ 0॥
रछतम बरसतल छुस शरण,
आसय शरण रॅटिमय च़रण।

रॅटिमय चरण प्योसय परन ॥
श्री शारिका दीवी नमः ॥ ० ॥
सन्ताप तापन पोवनस,
वासिक बॅु सेकि मंज़ सोवनस।
पापव बॅु नेंन्द्रे पोवहस ॥
श्री शारिका दीवी नमः ॥ ० ॥
प्राशन प्राशन दूर में गव,
प्रारन प्रारन सूर में गव,
वर दिम में कासतम बो'ड़ गमा ॥
श्री शारिका दीवी नमः ॥ ० ॥
माता चॅु छख दाता,
करनावतारस चॅुय सोरिथ।
तारूम में तारस थफ करिथ ॥
पारस बनावुम में शेशतरस,
नारस कॅरिथ गुलज़ार दिम ॥
काया छि चॉनी द्वारिका,
चॅुय छख कृष्ण परमात्मा ॥
मंगान सुदामा छुय भिक्षा,
सरवैश्वर्य यकबार दिम,
माता चॅुय छख दाता।

रूग नाशनी, भय नाशनी,
शाप नाशनी।
शत्रु नाशनी॥ ०॥

- ० -

बोल माता शारिका की जय!
बोल राज्ञा माता की जय!!
बोल ज्वाला माता की जय!!!

- ० -

शारिका सदा भगवते, भवतु प्रसन्ना,
ज्वाला सदा भगवते, भवतु प्रसन्ना।
राज्ञा सदा भगवते, भवतु प्रसन्ना,
ज़िष्ठा सदा, भगवते भवतु प्रसन्ना॥

ॐ

मॉज शारिकॉय कर दया
वर दया ही भवॉनी।
कर दयायि हन्ज़ दृष्टी,
सों छम बॅड़ मेंहर बॉनी
आयि लारान चे़ं निशि योर,
कर्मु खुर्य भावॉनी,
मत वुछतुॅ कर्मन कुन,
सॉरी छी पशेमॉनी,
कोंत ताम रोज़ि युन त गछ़ुन,
कोंत ताम रोज़ि क्रेशुन वदुन,
तार दिवान सारिनॅय छख,
असिति रोज़ तारॉनी॥
कों पोतुर छि माजि आसान,
मॉज छनुॅ तस ति रोशान,
अॅस्य मंगान चॉनी दया॥
ज़गतुॅचि राजरॉनी॥ ० ॥
नखि छख डखि छख चुॅय,
चे़ं सिवा कांह ति छुन ब्याख।

दोंह त राथ चोनुय फिरान॥
अख सदायि रूहानी॥ 0॥
ओंश वसान च़ालि च़ाले,
मॉज भवॉन्य हावि दर्शुन।
केंह ति छुनुॅ तगान बोज़ुन,
केंह नय छिन अॅस्य ज़ानानी॥
बूज़मुत छु हलि मुश्किल,
बनि असि तवय आयि योर।
अख रछ़ा कर तुॅ वोंन्य गोर॥
हिमालुॅच राजरॉनी॥ 0॥
च अष्टा दश भुज़ा छख,
जगतस बॉगरानी।
अस्यति आमुॅत्य छि डेड़ितल॥
अनुग्रेंह छी मंगॉनी॥ 0॥
दास आव चोन दरबार,
दारि ओंश छुम वसॉनी।
कन थव बोज़ फ़ॅर्ययाद,
नाद छुसय लायॉनी॥
पाप शाप कासतम च़ुॅय,
वालतम बॉर्य पापनी।
गीर कोंरहस बुॅ पापवुॅय॥

केंह नय छुसन ज़ानॉनी ॥ 0 ॥
लोकचारस मॅशिथ गोम,
बुजरस छुस सोंरान दय।
कांह ति छा येति मेंय ह्युव,
क्रेंजलि पोन्य सारॉनी ॥
दासस दर्शुन हाव,
सन्मोंख मोज ज़गतस।
लोल चानि दोह तय राथ,
नाद छुसय लायॉनी ॥
दास छुस दर इन्तिज़ार,
भवसागरस दिम तार।
लेम्बि मंज़ पम्पोश खार ॥
बोज़तय चुॅ म्यॉन्य ज़ॉरी ॥
मॉज शारिकॉय कर दया,
वर दया ही भवानी।
कर दयायि हुन्ज़ में दृष्टी,
सों छम बड़ मेंहर बानी ॥ 0 ॥



मुद्रक : तारा आर्ट प्रेस, बी-4, हंस भवन, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002





